International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 15-11-2019; Accepted: 16-11-2019
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 1; January 2020; Page No. 50-51

अब्दुल बिस्मिल्लाह के साहित्य में व्यक्त संवेदना

डॉ. सुनीता देवी
पी.डी.एफ. हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला, भारत

प्रस्तावना

साहित्य मानव की संवेदनाओं का कलात्मक रूप में अभिव्यक्तिकरण है। इसमें भावनाओं और कल्पनाओं की असीम पृष्ठभूमि विद्यमान रहती है कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह का साहित्य इसका साक्षात् प्रमाण है। इनके साहित्य में निर्झरिणी की भांति प्रगतिशीलता है और ह्दय को शांति देने वाली निर्मलता और पवित्रता। उसमें आह्लाद और आनंद है, जिस प्रकार एक नदी अपने प्रवाह के अनुकूल तटों का निर्माण कर लेती है, उसी प्रकार अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य की संवेदना अपने अभिव्यक्तिकरण में सिद्धान्तों का निर्माण करती है। इनका कथा संसार जिस विशिष्ट दृष्टि को लेकर चलता है। वह जीवन के अन्तर्जगत् और बहिर्जगत् दोनों का स्पर्श करता है।

गोपाल प्रसाद व्यास ने इस लेखक के विषय में कहा है, ''जो वेदना को पी सकता है, वही हँस सकता है। जो जीवन के प्रति, उसके मूल्यों के प्रति गंभीर है, वही व्यवहार में हल्का–फुल्का हो सकता है।''[1] यही इनका शान्त स्वभाव ही है कि इन्होंने सत्त कोमलता में ही समाज व परिवार की तस्वीर समक्ष रखी है। बिस्मिल्लाह जी संवेदनशील व्यक्तित्व के धनी हैं। उनकी यह संवेदनशीलता हिन्दू–मुस्लिम तथा संसार के हर एक जाति के लोगों से जुड़ी हुई है। उनके ह्रदय की यह संवेदनाएँ उनकी रचनाओं में दृष्टिगत होती हैं।

इस सन्दर्भ में राजेन्द्र राव का कथन उचित ही लगता है कि ''झीनी झीनी बीनी चदरिया बनारसी साड़ी बुनने वाले लाखों अंसारी मुसलमान दस्तकारों के परिपाटी बद्ध शोषण और दोहन से उपजी अमानवीय जीवन परिस्थितियों का सजीव चित्रण करने वाला एक प्रामाणिक दस्तावेज है।''[2]प्रस्तुत उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है मतीन जो एक बुनकर है। उसने जब से होश संभाला है तब से वह बानी पर ही बिनता आ रहा है उसकी ऐसी स्थिति कभी नहीं रही कि खुद की कतान खरीद सके। उसकी ऐसी स्थिति रही कि हाजी अमीरूल्लाह साहब (गिरस) दे तो खाओं वरना भूखे रहो। इस सन्दर्भ में स्वयं मतीन का कहना है कि ''करघा अपना, जाँगर अपनी सिर्फ कतान हाजी साहब का लेकिन हाजी साहब की कोठियाँ तन गयी और मतीन उसी ईंट की कच्ची दीवारों वाले दरबे में गुजर कर रहा है। पेट को ही नहीं अंटता, क्या करें? कितनी भी सफाई से बिनो, नब्बे रूपये से ज्यादा मजदूरी नहीं मिलने की हफ्तेभर में सिर्फ नब्बे रूपया! उसमें से भी कभी पाँच रूपया दाग का तो कभी तीन रूपया मत्ती का और रफू का तो कभी तीरी का कट जाता है। वाह रे अल्ला मियाँ वाह, खूब इन्साफ है तेरा भी।''[3]यहां कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में मतीन की तरह कई पात्र, भी शोषक वर्ग के शिकार हैं। गिरस्ता लोग बुनकरों तथा उनके परिवार का किस तरह शोषण करते हैं। इसका मर्मस्पर्शी चित्रण उपन्यास में हुआ है। बुनकर बशीर बीमार है उसे अस्पताल में भर्ती करवाया जाता है उसे आराम तथा इलाज की जरूरत है। उसकी बीवी हाजी अमीरूल्लाह से कर्जा लेती है। गिरस्ता लोग भी ऐसे मौके के इन्तजार में ही होते हैं कि ''कोई आसामी कर्ज लेने आये तो कम–से–कम कर्ज वसूलने में जो एक खास किस्म का मजा है वह और किसी काम में कहां? प्रस्तुत उपन्यास में हिन्दू–मुसलमानों के बीच दीवार खड़ी करने का काम समाज के ठेकेदार ही करते हैं। वैसे देखा जाए तो धर्म दो ही हैं अमीर और गरीब। ये अमीर लोग हिन्दू हो या मुसलमान वे गरीबों का शोषण ही नहीं करते बल्कि उनकी धार्मिक भावनाओं को भड़काकर उनमें दंगे–फसाद भी करवाते हैं। इस सम्बन्ध में राजेन्द्र राव कहते हैं,''बनारस में साम्प्रदायिक दंगा किस तरह से पूर्व नियोजित होता है इस कुचक्रमें गरीब बुनकरों की बहुत बुरी दुर्दशा होती हैं।''[4] इसमें बुनकरों की आर्थिक स्थिति, गिरस्तों द्वारा उनका शोषण, उनके धार्मिक संस्कार, उनका परिवेश, राजनीतिक हथकंडे आदि परिस्थितियों को देखकर लेखक का संवेदनात्मक दृष्टिकोण स्वाभाविक है।

'जहरबाद' लेखक का आत्मकथात्मक उपन्यास है इसका कथ्य मध्यप्रदेश के पूर्वी छोर पर स्थित मंडला अँचल पर आधारित है। यह एक ऐसा प्रदेश है जहाँ आजाद हिन्दूस्तान की कोई भी योजना नहीं पहुँची है और यहाँ के बहुतसे लोग गरीबी रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इन्ही लोगों के माध्यम से लेखक ने समाज की विसंगतियों, वर्जनाओं तथा दारूण विषमताओं को मार्मिक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

''संक्षेप में कहें तो यह उपन्यास रोज–रोज मरकर जीने वाले अनगिनत पति–पत्नियों, पुत्रों और प्रेमी–प्रेमिकाओं की उनके दुःख–दर्द की ऐतिहासिक महागाथा है।''[5]मनोज कुमार झा इस उपन्यास के सम्बन्ध में लिखते हैं, ''दरसल यह उपन्यास ग्रामीण परिवेश में जीवन के अस्तित्व के लिए संघर्षरत, सर्वहारा लागों की कहानी है। उनके दुःखों की सुधाग्नि की दाहकता की, हताशा और निराशा की, झुंझलाहट, खिजलाहट और अंतहीन झगड़ों की तथा 'अभावों के कारण' मनुष्य के जहरीले जीव में परिवर्तित हो जाने की कहानी है। एक छोटे से बच्चे की आँखों का यह संसार जिसे भोगने–झेलने को वह विवश है और अपने सीमित अनुभवों के सहारे ही परिस्थिति की भयावह विकलता और निरीह क्षुद्रता की वजहों को समझने की कोशिश करता है और यह पाता है कि 'सारी लड़ाई की जड़ है पैसा।''[6]इस कथनों से स्पष्ट है कि लेखक ने अपने बचपन के जीवन को परिवेश के साथ जोड़कर उसके अभाव, हताशा, निराशा, झुंझलाहट, टकराव, अंतहीन झगडे, दुःख दर्द, प्रेमी–प्रेमिकाओं का रोमांस, अनैतिक सम्बन्ध है जहां लेखक की संवेदना का सागर उमड़ जाता है।

'समरशेष है' उपन्यास में छत, रोटी और अस्तित्व के संघर्ष में पकते हुए युवक की व्यथा–कथा को प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास के सन्दर्भ में शशिकला त्रिपाठी लिखती हैं, ''जिन्दगी क्या है? जिन्दगी का वजूद खुद के लिए है या औरों के लिए? यदि औरों के लिए उसकी जरूरत न हो क्या जीते रहने की कोई अनिवार्यता है? व्यक्ति की जिन्दगी क्या अपने लिए इतनी महत्त्वपूर्ण है कि घृणा, अवमानना का बोझ लगातार ढोते रहने के बावजूद भी जिजीविषा बनायी रखी जाए? इतना ही नहीं अभाव की भयंकरता में भी क्या सुन्दर भविष्य की कामना की जा सकती

है आदि तमाम सवालों से टकराता है कथाकार बिस्मिल्लाह का आत्मकथात्मक उपन्यास 'समरशेष है'[7]।

'तलाक के बाद' कहानी में देखें तो यहाँ यातना के बीच जीवन का अन्वेषण पूर्णतः द्रष्टव्य होता है इसमें मुस्लिम समाज के रीति–रिवाजों पर, नियमों पर करारा व्यंग्य किया गया है। समाज के नियमों का पालन करना जरूरी है लेकिन ऐसे नियम भी किस काम के जो व्यक्ति को व्यक्ति से, पत्नी को पत्ति से अलग कर दे। सत्तार और साबिरा के विवाह में दूल्हे के रिश्तेदारों को शराब न देना इस छोटी सी बात के कारण सत्तार के पिता साबिरा के पिता पर गुस्सा रहता है। आगे चलकर इसका कोप भाजन साबिरा को ही बनना पड़ता है। वे तलाकनामा लिखकर और अपने बेटे को धमकाकर उस पर दस्तखत करवा लेते हैं और साबिरा अपनी मां के घर चली जाती है। एक दिन सत्तार अचानक साबिराकी माँ के घर पहुंचता है। वह कहता है कि मैंने साबिरा को अपने मन से तलाक नही दिया है। सत्तार और साबिरा फिर से इकट्ठे रहना चाहते है लेकिन माँ इसकी इजाजत नही देती वही शरीयत और सामाजिक नियम का हवाला देते हुए कहती है, ''जब तक साबिरा का निकाह किसी दूसरे मर्द से न हो जाये और उसके साथ रहने के बाद जब तक वह मर्द तलाक न दे दे, साबिरा तुम्हारे निकाह में नहीं आ सकती।''[8] प्रस्तुत कहानी में मुस्लिम समाज की सड़ी गली परम्परा का यथार्थ लेखा–जोखा स्पष्ट किया है।

मध्यमवर्गीय समाज के तनावोंको अब्दुल बिस्मिल्लाह इस प्रकार रचते हैं कि वे तथाकथित यथार्थवाद से निरासक्त हो जाते हैं 'आग' कहानी इसका ज्वलन्त उदाहरण है इस कहानी में 'मुन्नी' की कहानी को प्रस्तुत किया गया है 'मुन्नी' का कम उमर में विवाह हो जाता है। उसका पति नकली जेवरों का बिजनेस करता है। मुन्नी को पाँच बच्चे हो गये हैं वे अपने बच्चों के साथ नागपुर में रहती है। नकली जेवरों को बेचने के अतिरिक्त कुछ दूसरे धंधे भी उसका पति करता है। लड़की बेचना उसका विरोध मुन्नी करती है तो उसे पीटता है। धीरे–धीरे उसका घर आना कम होता है और पैसे भी कम देता है। गृहस्थी चलाने के लिए मुन्नी अपने लिए दूसरों को मुसीबत में नही डालना चाहती। मुन्नी की घर की स्थिति अत्यंत दयनीय है। राशन का माल दुकानदार उधार नहीं देता। कथानायक कहता है, ''मुझे लगा कि उस टूटी हुई अलमारी के पीछे एक आग जल रही है जो मेरे भीतर की आग से अधिक भयंकर है।''[9] प्रस्तुत कहानी में हमारे समाज में नारी पर होने वाला अन्याय, अत्याचार, शोषण को संवेदनात्मक रूप से वर्णित किया गया है। गरीबों के शोषण के लिए धर्म को हथियार बनाया जाता है। गरीबों के शोषण में धर्म की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और समर्थ लोगों के लिए धर्म सबसे बड़ा कारगर हथियार रहा है। धर्म से भारतीय समाज को जितनी क्षति पहुंचती है उतनी किसी अन्य चीज से नहीं। 'लफंगा' कहानी का एक पात्र कहता है ''मजहब ने तो आज तक किसी का कोई भला नहीं किया। हाँ उसके नाम पर अत्याचार तो बहुत हुए हैं।''[10]

मानवीय संवेदनाओं और रिश्तों के विघटनों को दूसरा सदमा, 'लंठ' और 'पेड़' बड़ी मार्मिकता के साथ व्यक्त करती हैं। दंगे पहले शहरों में ही हुआ करते थे और गांव इस बीमारी से सर्वथा अछूते थे, किन्तु अब गांवों में भी यह बीमारी फैल गई है। गांवों में इस बीमारी को फैलाने में धर्म के ठेकेदारों का ही हाथ है। निहित स्वार्थ के लिए ऐसे लोग भोले–भाले लोगों के दिलों में साम्प्रदायिकता के जहर की भावना को इस तरह भर देते हैं कि गांव वाले आदमी और मनुष्य में 'धर्म और मजहब' में तथा 'जल और पानी' में फर्क करने लगते हैं। ग्राम–सुधार कहानी का एक पात्र कहता है, ''जल होता है गंगा का, जल होता है घड़े का जो पवित्र होता है, शुद्ध होता है और पानी होता है तोंतीदार लोटे, यानी बधने का जिससे मुसलमान जोग उज्जू बनाते हैं और नाक छिनकते है।''[11]

'लंठ' महत्त्वपूर्ण कहानी है जिसमें साम्प्रदायिकता की भावना और समुदाय की धूर्तता का चित्रण किया गया है। 'लंठ' कहानी का आरिफ बिल्कुल भोला भाला है। आरिफ अपने भोलेपन के कारण साम्प्रदायिक राजनीति का शिकार हो जाता है और अपनी जान से हाथ धो बैठता है। कहानीकार की पूरी कोशिश रही है कि, साम्प्रदायिक दंगों के पीछे काम करने वाली शक्तियों को बेनकाब करना, सद्भाव तथा भाईचारा को स्थापित करना। ये कहानियां फिरक्का परस्ती और साम्प्रदायवाद से लड़ने की दिशा में एक साकारात्मक सोच पैदा करती हैं और यह विश्वास दिलाती हैं कि भारतीय समाज मत–मतातरों की भिन्नता के बाबजूद एक है और उसकी सांझी संस्कृति है जिसे तोड़ना आसान नहीं हैं।

अतः यह कहना तर्क संगत है कि अब्दुल विस्मिल्लाह का समूचा कथा संसार संवदेन–सपन्दन और तरह–तरह के जीवनागत संत्रासों से अपने मौजूद देशकाल में भी और अपने स्थानांतरित होते देशकाल में विन्यस्त और व्यस्त होता दिखाई देता है।

संदर्भ सूची

1. कौशल्या अश्क (सं.) अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व, पृ. 01
2. चन्द्रदेव यादव (सं.) अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य में संकलित राजेन्द्र राव का लेख, पृ. 33
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह, झीनी–झीनी बीनी चदरिया, पृ. 11
4. उपरिवत्, पृ. 42
5. वसीम मंक्रानी, अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य, पृ. 88
6. चन्द्रदेव यादव (सं.) अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य में संकलित विरेन्द्र यादव का लेख, पृ. 91
7. चन्द्रदेव यादव (सं.) अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा साहित्य में संकलित शशिकला त्रिपाठी का लेख, पृ. 74
8. अब्दुल बिस्मिल्लाह, कितने–कितने सवाल, पृ. 22
9. अब्दुल बिस्मिल्लाह, जीनिया के फूल, पृ. 37
10. अब्दुल बिस्मिल्लाह, रैन बसेरा, पृ. 103
11. अब्दुल बिस्मिल्लाह, अतिथि देवो भव, पृ. 125